IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजस्थान की स्थापत्य कला में बावडियों का स्थान

राजेश कुमार पालीवाल

कैलाश त्रिवेदी, गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, गंगापुर (भीलवाड़ा)

(विध्या संबल योजना के अन्तर्गत कार्यरत)

सारांश :-

सदियों से राजस्थान अपने शोर्य और वीरता के लिए जाना जाता है यहां आठवी सदी से लेकर बारवीं सदी तक राजपूत काल रहा है जिनमे अनेक वीर उत्पन्न हुए। इन वीरों ने राजस्थान का गौरव बढाया उसके साथ साथ इन्होंने राजस्थान के स्थापत्य कला में भी अधिक विकास किया और राजस्थान का गौरव बढाया। स्थापत्य में इन्होंने महल, दुर्ग, इमारतें, तथा बावडियों का निर्मण किया। ये बावडीयां उस परिस्थिति के अनुसार स्थापत्य और जन जीवन के लिए बहुत उपयोगी रही, क्योकि यहाँ की प्रस्थिति विषम रही थी।

मूल शब्द :-

स्थापत्य, बावडिया, सीढ़िया बरामदा, ताके, ढालान,

भूमिका :-

राजस्थान स्थापत्य कला में सदियों से महत्वपूर्ण इमारतों का निर्माण किया इनमें दुर्ग, महल व् इमारते जो की यूनेस्को द्वारा सम्मानित की गई है। उनमे से प्रमुख है बावड़ी बावड़ीयों का निर्माण सदियों पूर्व हो चूका था परन्तु राजस्थान में इसका निर्माण के अवशेष या उल्लेख प्रथम शताब्दी में मिलते है। इसका वर्णन प्रारम्भ में ऋग्वेद में मिलता है।

शोध विधि :-

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक एंव वर्णात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। सामग्री की प्रमुख पुस्तको से संकलित किया गया है। यह शोध पत्र दितीय आंकड़ो पर आधारित है

शोध के उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उधेश्य हे

1. राजस्थान की स्थापत्य कला के महत्त्व को जानना
2. स्थापत्य कला में बावडियों का योगदान

3. बावडियों से तत्कालीन धार्मिक और राजनेतिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना

बावडियो का इतिहास :-

सर्वप्रथम बावडियो का निर्माण का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता हे परन्तु पूर्ण रूप से बावडियो का निर्माण छठी शताब्दी में गुजरात में हुआ परन्तु उसका विकास धीरे धीरे दक्षिणी–पश्चिमी भाग में आरम्भ किया राजस्थान में बावड़ी निर्माण की परम्परा अति प्राचीन हे यंहा की बावडिया हड़प्पा युगीन संस्कृति के आधार पर बनायीं गयी हे यंहा प्राचीन बावड़ी का उल्लेख प्रथम शताब्दी के शिलालेख में मिलता हे भीलवाडा के गंगापुर के निकट नांदसा गाँव के एक युप स्तूप मिला जो विक्रम संवत 282 इस्वी में लिखा गया

राजस्थान की बावडियों का साहित्यक सन्दर्भ :-

वराहमिहिर कृत वुहुतसंहिता में उल्लेख हे की देवता, नदी, वन और जलाशय की और निवास करते हे एसा ही उल्लेख विष्णु धर्मोत्तर में किया गया वाल्मीकि के रामायण के सुन्दरकाण्ड में अशोक वाटिका में हनुमान जी ने ऐसी सुन्दर बावडिया देखी ऐसी बावडियो का निर्माण भी हुआ जिसमे भीतरिय आवासीय व्यवस्था हुआ करती थी कालीदास द्वारा अचित रघुवंशम के तेरवे सोलह में इसका उल्लेख किया गया राजस्थान में ऐसी अनेक बावडिया हे जिसमे आभानेरी (दौसा)] सिया, जोधपुर और भीनमाल में स्थित हे जिसके अन्दर आज भी आवास देखे जा सकते हे कालीदास ने मेघदूत (पंद्रह से सत्रह श्लोक) में यक्ष द्वारा अपने घर के भीतर बावड़ी का वर्णन किया राजस्थान की प्रारंभिक बावडियों में अब्लेश्वर की शुगकालीन बावड़ी उल्लेख हे क्योंकि आकार में यह गाले और पाषाण जडित हे

राजस्थान बावडिया के स्थापना में संदर्भ :-

प्राचीन बावडियों निर्माण का उल्लेख प्रथम शताब्दी से मिलता हे भीलवाडा के गंगापुर के निकट नंदसा गन में यूप स्तम्भ मिला हे जो विक्रम संवत २८२ में लिखा गया हे झालावाड संग्रहालय में रखे गंगाधर शिलालेख में बावड़ी निर्माण का उल्लेख हे बोज द्वारा बनायीं गयी वास्तुशास्त्र की प्रसिद्ध ग्रन्थ में बावडियों के प्रकार बताये गए हे

1. नन्दा – इसमें एक या दो द्वार तथा कूट के होते हे
2. भद्र – दो दीवारों एवं शट कूट वाली सुन्दर बावड़ी
3. जाया – इस दुर्लभ बावड़ी में तीन द्वार व नो कुट होते हे
4. सर्वतो मुख – इसमें चार द्वार तथा बारह सुन्दर कूट होते हे

सातवी शताब्दी में नगरी के प्राचीन भीनमाल शिल्पियों का उल्लेख प्राप्त होता हे

राजस्थान की प्रमुख बावडिया :-

आभानेरी की चाँद बावड़ी :-

आभानेरी की बावड़ी बंदी कुंई रेल्वे स्टेशन से आठ किलोमीटर दूर बंदी कुंई दिल्ली मार्ग पर स्थित हे इसका निर्माण निकुम्भ वंश के रजा चन्दा या चन्द्र ने आठवी से नवी शताब्दी में निर्माण करवाया यह एक वैष्णव मंदिर से सम्बन्ध हे जिसे हर्ष माता के मंदिर के नाम से जाना जाता हे तेरह मंजिली इस इस बावड़ी

के अंदर 3500 सीढिया हे यंहा अँधेरी उजाला नाम से से छोटा सा कमरा हे बावड़ी के सबसे निचे की दो ताको में गणेश व महिषासुर मर्दिनी की भव्य प्रतिमा लगी हुयी हे यह देव प्रतिमाये एव देव्कुलित की मुर्तिया मिली हे

भंडारेज की बावड़ी :-

दौसा से ग्यारह किलोमीटर दूर भांडारेज गाँव स्थित हे यह गाँव पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण हे महाभारत में भाद्रवाली के नाम से प्रसिद्ध पांच मंजिला बावड़ी की सीढिया ताल तक जाती हे तथा ऊपर बरामदे बने हुए हे प्रवेश द्वार पर आकर्षक गुम्बद बने हुए हे यंहा से प्राप्त शिलालेख से पता चलता हे की इसका निर्माण 1789 में कुम्भाणी के शासक दौलत सिंह ने करवाया था यंहा से प्राप्त शिलालेख के अनुसार 1891 में रणजीत सिंह ब्रज गोपाल जी का मंदिर का निर्माण करवाया

बूंदी की कलात्मक बावड़ी :-

बावडियों का नाम शहर के नाम से जाने जाने वाली छोटी काशी में लगभग 71 छोटी बावडिया हे इनमे से रानी जी की बावड़ी की गणना एशिया की सर्वश्रेष्ठ बावड़ी में की जाती हे इसका निर्माण राजा आनिरुद्ध की रानी राजमाता नाथावती ने 699 इसवी में बुधसिंह के शासनकाल में करवाया

यह 300 फीट लम्बी व 40 फीट चोडी हे इसके प्रवेश द्वार पर तीन दरवाजे हे इसमे लगभग 150 सीढ़िया हे सीढ़िया उतारते समय 27 वी सीढ़ि के बांये बांये शिव पार्वती की भव्य मुर्तिया हे 47 वी सीढ़ि पर भव्य कलात्मक द्वार बना हे यह तोरण द्वार आठ स्तंभों पर बना हे 101 वी सीढ़ि पर दोनों और अलंकृत तोरण के साथ नव ग्रहों व दशावतार की प्रति के साथ सरस्वती व गणेश जी की प्रतिमा हे

विनोता की बावड़ी :-

बड़ी सादडी में स्थित हे इस बावड़ी का निर्माण सूरज सिंह शक्तावत ने करवाया था बावड़ी में प्रवेश द्वार हेतु दोनों में कलात्मक सीढ़िया बनी हुयी हे यह सिहिया चारो दिशा में निर्मित थी जो दरवाजे से होते हुयी जल स्टार तक पंहुचती थी बावड़ी में पूर्व-पश्चिम में दरवाजे बने हुए हे इसके उत्तर में विशाल दरवाजा बना हुआ हे जिसे हठी दरवाजा कहा जाता हे

इसके आलावा राजस्थान में स्थापत्य व जल संरक्षण के लिए अनेक बावडिया बनी हुयी हे हाडारानी बावड़ी, पन्ना बावड़ी, भीका जी की बावड़ी जो की स्थापत्य एवं जल संरक्षण की द्रष्टि से अंतिम महत्वपूर्ण हे जो राजस्थान में जल की आपूर्ति व सोंदयपूर्ण बनाये रखती हे अनेक बावडियों को यूनेस्को द्वार पुरस्कृत किया गया हे जिसमे आभानेर की चाँद बावड़ी प्रमुख हे

सन्दर्भ :-

1. राजस्थान जल प्रबंधन – डॉ. अमर सिंह राठोड
2. राजस्थान की बावडिया साहित्य सन्दर्भ – ब्रज मोहन सिंह परमार
3. राजस्थान स्थापत्य सन्दर्भ – चंद्रमणी
4. राजस्थान की प्रमुख बावडिया – आभानेरी बावड़ी नीलिमा विशिष्ट
5. भाडारेज बावड़ी सन्दर्भ – सुभाष चन्द्र शर्मा
6. बूंदी की कलात्मक बावड़ी – प्रभात कुमार
7. बिनोता की बावड़ी – शम्भूदान रतनु